अंतरा-शब्दशक्ति

उसकी नीलाभ आँखों में

नज़्म संग्रह

ब्रजेशशर्मा 'विफल'

उसकी नीलाभ आँखों में

(काव्य संग्रह)

ब्रजेश शर्मा विफल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN-978-93-88102-82-7

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - सी.ए. शीतल खंडेलवाल
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Guftgu,. Dil ki Dil Se by C.A. Sheetal Khandelwal

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रस्तावना

लेखन का उद्देश्य यूँ तो लेखन का उद्देश्य स्वान्तः सुखाय ही है। पर किसी को छू ले तो क्या बात है। मेरे लेखे, लेखन भावाभिव्यक्ति की वो कला है जो लेखक को भीड़ से अलग करती है। सार्थक लेखन, जो सकारात्मक प्रवृत्तियों के द्वार खोलने में सहायक हो। और वही लेखन मुझे सफ़ल लेखन प्रतीत होता है जब पाठक और लेखक के मध्य एक तादात्म्य स्थापित हो। और पाठक को रचना आप बीती सी लगे। मेरा लेखन मुझमें यही विश्वास भरता है।

विविध अवसरों, परिस्थितियों और मन:स्थिति में सृजित इन नज़्मों में, कहीं ख़ुद से होकर ही गुजरता मन है तो कहीं उपालंभ की संदली खुशबुएँ हैं।

कहीं प्रकृति के सरोकार नजर आएंगे तो कहीं प्रिय से रूठना मनाना। विविध रंगी इन नज़्मों से होकर गुज़रें और कुछ अरसा अपने आप में डूब कर बेसबब मुस्कुरा उठें। तो इन नज़्मों का होना मेरे लिए भी एक सार्थक उपलब्धि होगी। मित्र आ सुनीता लुल्ला जी का इन नज़्मों के संपादन में विशेष योगदान है, उनका आभार।

और अंतरा शब्द शक्ति से डॉ प्रीति सुराना, हम जैसे सृजकों के लिए ख्वाबों की ताबीर हैं उनका आभार तो सदैव है ही।

ब्रजेश शर्मा विफल
झाँसी

अनुक्रमणिका

1. उसकी नीलाभ आँखों में 7
2. रंगों की तलाश 8
3. इम्तहान 9
4. नया आगाज़ 10
5. परवाह 11
6. लम्हा 12
7. खुशबू की लकीर 13
8. अजीब दरिया 14
9. तेरा चेहरा 15
10. प्रकृति 16
11. दंश 17
12. आईने मुकम्मल हैं 18
13. उजास 19
14. तेरा ख़याल 20

15. तेरे शहर की ओर... 21

16. जुल्फों की मानिंद 22

17. ओ मेरे मनमीत 23

18. अदा रोने की 24

19. कैसे कह दूँ ?? 25

20. अनकही मूक बातें 26

21. पैग़ाम 27

22. अभिशप्त 28

23. तलाश 29

24. प्रश्न चिन्ह 30

25. उदासी 31

26. नाम 32

उसकी नीलाभ आँखों में

मैं उसे कुछ दे सकूँ
इस काबिल कभी हुआ भी नहीं !
कोई वादा, कोई ख्वाब
कोई हसरत कोई याद
कुछ भी नहीं !
सोचता हूँ बिखरे पन्नों को
संजो ले वो !
गो वक्त का परिंदा
बैठा है डैने समेट
कोई अश्क उसके गालों पर
आकर अभी ठहरा भी नहीं
आस्माँ तो फिर आस्माँ है
रंग बदलना उसकी फितरत ठहरी
'उसकी नीलाभ आँखों में'
कोई रंग भी उतरा भी नहीं
गुम हो गया वो खुद में
जब कभी उसने आईना देखा
ये हाल तो तब है , जब उसकी
सोचों पे कोई पहरा भी नहीं
मैं कोई वादा तो कर लूँ
पर क्या भरोसा है मेरा ?
पारे की बूँद सा मेरा मिजाज 'विफल'
किसी मरकज़ पे कभी ठहरा भी नहीं,..!

रंगों की तलाश

मैं जानता था किसी रोज़ तो
बेपर्दा होगी
अधूरी चाहतें कितनी हसरत से
तेरी पनाह में थीं
न कोई अश्क मेरी आँख में
न बेचैनी कोई
कितनी मासूमियत मेरे उस इक
गुनाह में थी
शिकायतें भी तो मुहब्बत का इक
फलसफ़ा है ऐ दोस्त
कुछ न कहने की अदा भी
कभी मेरी आन में थी
सच- झूठ, असल- नकल के
संदर्भ सब बेमानी हुए
रंगों की तलाश में कोई तितली
कल एक दुकान में थी,...!

इम्तहान

यूँ चुप रह कर
न ले मेरे इश्क का इम्तहान
के तू खुद भी जानती है
पूजने की हद तक
चाहता हूँ तुझे
मेरे दर्द से तुम अनजान रहे
कुछ भी न कहा,
कुछ भी न सुना,..
शीशे के घरों की तकदीरें क्या ?
जब टूटा तो कुछ भी न रहा !
आईने मुकम्मल हैं खुद में
खामी चेहरों की होती है
मुस्कानें दर्द बयाँ करतीं
पलकों पर शबनम होती है
तिश्नगी लबों पर
तूफ़ान कोई सीने में है
तुझसे जुदा हो कर
क्या खाक मजा जीने में है
पत्थर के सनम तराश लिये
फिर दर्द कोई बाकी न रहा
कुछ भी न सुना,
कुछ भी न कहा,...!

नया आगाज़

चलो एक नया आगाज़ दें, इस रिश्ते को ...
तुम अपनी खुशियों के बीच मेरी कमी महसूस करो तो आवाज़ देना मुझे,
मैं अब फिर पुराने, पीले पड़ चुके दिनों की,
उलझनों से निकल आना चाहता हूँ
जिन यादों पर चढ़ा दी है विस्मृति की गर्द तुम्हारी व्यस्तताओं ने,
या कुछ पुनर्मिलन के पल मेरी चाहतो पर भारी हैं जहां,
मैं इंतज़ार करता हूँ फिर दरिया के उन टूटे किनारो पर तुम्हारी आमद का,
जहां तुमसे पहले चली आती थी खुशबू तुम्हारी,,
पानी कुछ और संदली होकर आता था मुझ तक,,
तुम्हारी अंगुलियों से होकर,
किसी रुपहली मीन सी होती थी जब पानियों के अक़्स में पायल तुम्हारी..
फिर तुम्हारे उस मौन का मुंतज़िर है ज़र्रा ज़र्रा जहाँ,
जहाँ हर आवाज़ का जादू आज भी फीका फीका सा है तुम्हारे बिना ....
चाँद मद्धम ही सही पर देगा मुझे तुम्हारी आमद के निशाँ..
दरिया के फिर उन्हीं टूटे किनारों पर,
जहां हरी दूब आज भी याद करती होगी,
कुहनी से चेहरे टिकाये बहती जल राशि पर,
थरथराती अंगुलियो से एक दूसरे का नाम लिखते,
दो खोये हुए चेहरों को,... गुम हो चली उस शबनमी आवाज़ को,
एक बार महसूस कर खो जाना चाहता हूँ मैं,,हमेशा के लिए,
दरिया के उन्ही टूटे किनारों पर,.....!!!

परवाह

गुलाबी मौसमों में भी तेरी हसरतों ने
मेरी चाह न की
मेरा मन प्यासा ही रहा
पर लबों ने कभी आह न की
झूठी मुस्कान, बदलते रंग, सुनहरे ख्वाब
तिजारत के कोई दस्तूर होंगे
हम सच के तमन्नाई
दर्द और अश्कों से जुदा
कोई नेमत इज़ाद ने◌े की
उफ़ ! वो क्यूँ माँग बैठे हैं
मेरी वफ़ाओं का हिसाब ?
भँवर में डूब कर भी हमने
कभी लहरों से फ़रियाद न की
वाजिब वजह है मेरी दीवानगी की,
तेरे इश्क में *विफल*
तेरी खातिर खामोश है वो
जिसने जमाने की कभी परवाह न की,..!!

लम्हा

मै भूला नही हूँ आज तक अभी तक
याद है वो ज़मीं वो फ़लक़ अभी तक
मुझे हर घड़ी हर लम्हा हर बात याद है
गोया भीतर का जंगल यूँ आबाद है
मेरे मन की गलियों मे बिखरी तेरी बातों की गमक
सुधियों की पायल कंगन की खनक
तेरी शबनमी आँखे वो उदास सा चेहरा,
मेरे अंतर की परत परत पर तेरे ख्यालों का पहरा,
शाम दर शाम टूटती बिखरती सम्भावनाएं,
और तेरेलबों पर फैली मीलों लम्बी वर्जनाएं ...
वो तेरा मेरा लबो को छूकर
धीमे से गुज़र जाना
निगाहें मिलते ही नज़रें झुकाना
इशारों इशारों में जमाने का डर
कभी खुद में उलझे आपा धापी के स्वर
वो तेरा बातों बातों मे
यूँ ही चिढ जाना,
वक्त बे वक्त खुद की गलतियों पर ही ख़ुद रूठ जाना,
अपनी चाहतों के किस्से सुनाना,
मेरी बातों पर मुझको सिक्के सुनाना,
मुझको अभी तक तो सब याद है,
मेरे भीतर का जंगल यूँ आबाद है ।।
तुम्हे भी सब याद होगा,..है ना ????

खुशबू की लकीर

मैंने तेरे इर्दगिर्द खींच दी है
खुशबू की लकीर
अपनी उदासियों से उबर कर
साँसों में बसा ले मुझको
ज़िन्दगी पहेलियों का अधूरा सा
खेल है गोया
आँगन के गुलाबों की तरह
जहन में खिला ले मुझको
तुझको मेरी वहशत कभी
रास न आयेगी
अपने ही किसी ग़म की तरह
सीने से लगा ले मुझको
कहने को तुझसे दूर सही
तेरी रूह का एहसास हूँ मैं
तेरी खुशियों का कोई गीत हूँ
यूँ ही गुनगुना ले मुझको
शिकवे मेरी फ़ितरत के तो
चलते ही रहेंगे
चंदन की एक सुवास हूँ मैं
ख्वाबों में बसा ले मुझको
नहीं होता मेरे अफ़सानों में
किसी और का जिक्र
मेरे मुकद्दर में तू नहीं, न सही
चल बालों में सजा ले मुझको,..!

अजीब दरिया

ज़िन्दगी का दरिया भी,
अजीब दरिया है !!
यहां डूबने वाले ही , पार होते हैं...!!
किनारों से पलट कर ही, लौट आते हैं जो !!
वो यक़ीनन ख़ुद से भी, शर्म सार होते हैं !!
उसके रुखसारों पे थरथराती है,कुनकुनी धूप !!
क्या हवाओं के भी घर द्वार होते हैं ??
चेहरे पे चेहरा लगाये, लोग पुजते हैं यहाँ !!
ज़ख्म सहलाने वाले अक्सर, दर किनार होते हैं !!
मैं उसकी नम आँखों में, देखता हूँ जब भी !!
कुछ अश्क़ बेपर्द: होकर भी,
दरम्याँ दीवार होते हैं !!
सर्द अंधेरों की रेहन हुई, रौशनी जब से !!
तब से जुगनू भी, दीवानावार रोते हैं !!
खुशबू,मुस्कान,शबनम झूठ के आईने हैं "विफ़ल"
सच के दामन में यहाँ, फ़क़त ख़ार होते हैं !!

तेरा चेहरा

अब तो मुझे याद भी नही करते??
बस इतना सा ही अफ़साना है मेरी मुहब्बत का
लबों पे तेरा नाम ख्यालों में तेरा चेहरा
आँखों में नींद का कोई नामोनिशां भी नही
ख़्वाब अव्वल तो आते ही नही,
भूले भटके कोई आ जाये तो पुराने पैरहन सा,
अपने वज़ूद में सलवट लिए,
शुष्क मौसम जाने क्यूँ,
उदासियाँ अपने साथ लाता है??
मेरी थकी आँखों को
फिर फिर तलाश है उसी रेशमी आंच की
जो झरती है तेरे कोमल लबों से
गो देखा करती हैं,शाम दर शाम
अपने दर्द से निज़ात पाने को
दूर क्षितिज में धुन्धले से साये
जो और कुछ नही बस
गंदुमी आसमाँ की रानाईयाँ है
सदियाँ फ़ना हुई है जिसे सजाने में
तेरी चाहतों के गुलाब भी तो
खुशबुओं से बदन चुराने लगे है
पोर पोर रिसता है दर्द
मन की उन अनजानी वीथियों से
यूँ ख़ुद को ही मनाने में जमाने लगे हैं,..!

प्रकृति

मैं प्रकृति तुम्हारी जीवन दायिनी
आज फिर तुम्हे याद आएगी मेरी,,
फिर विश्वव्यापी होंगी तुम्हारी चिंतना,
फिर उमड़ेगा धरा के प्रति तुम्हारा प्यार,
फिर सताएंगी तुम्हे पर्यावरणीय समीकरण की चिंताएं,
फिर याद आएंगी तुम्हें ओज़ोन के परत में छेद करती कहानियाँ..
और फिर सब भूल जाओगे तुम ,
सुबह से शाम तक गाल बजाने के बाद,
साँस लेना तक दूभर कर डाला है
तुमने,
उगा दिए हैं सीमेंट कंक्रीट के जंगल,
मेरी कोमल धरा पर,
कभी सोचा इस भौतिक अंधी दौड़ की नियति..
कराहती दम तोड़ती ज़मीन की चटकी हुई परतें,
साल हा साल रौद्र होते मौसम,
दरिद्र होती जिजीविषाएं,
समय से पूर्व काल के गाल में समाते तुम्हारे तथा कथित अन्न दाता,
बूँद- बूँद तरसाते बादल, अग्नि गर्भा गगन, झुलसती चमड़ियाँ,
सूखते दरिया, रीतती जल निधि....
क्या-क्या गिनाऊँ तुम्हे??
आसान होता है सोये को जगाना,
मग़र कोई सोने का बहाना करे तो???

दंश

तुमने फ़ना कर दिए हैं अपने हुनर,
अपने फ़न से,
अपने सन्तुलन के तमाम आयाम,,
न आँगन में चहकती गौरैया हैं,
न जंगल में नाचते मोर ...
न कोयल की कूक
न पपीहे की करुण पुकार!!!
न चन्दन वन के सर्प हैं,
न बादलों से होड़ लेते देवदार!!
तुम्हारी अंधी दौड़ ने मासूम बचपन भी ग्रस लिए हैं,
न रसाल पर पत्थर मारती बच्चों की टोलियां हैं,,
न नीम की ऊँची टहनियों पर पड़े झूले..
क्या क्या गिनाऊँ
कुछ भी तो नही छोड़ा तुमने,
मुझमे मुझसा....
क़दम क़दम पर दंश
चुकने लगी है मेरी सहनशीलता ।।
तुम्हारे पास मेरे ज़ख्मों का मरहम तो है,,
मग़र इस प्रमाद का कोई क्या करे....??
मन करता है मेरा भी अब तो करवट लेने का ।।

आईने मुकम्मल हैं

मेरे दर्द से तुम अनजान रहे
कुछ भी न सुना,
कुछ भी न कहा
शीशे के घरों की तकदीरें क्या?
जब टूटा तो कुछ भी न रहा
आईने मुकम्मल हैं खुद में
कमियाँ चेहरों की होती हैं
मुस्कानें दर्द बयाँ करतीं
पलकों पे शबनम रोती है
तिश्नगी लबों पर तेरे भी
तूफ़ान कोई सीने में है
तुझसे दूर मैं रहता हूँ
क्या ख़ाक मजा जीने में है
पत्थर के सनम तराशे हैं
फिर दर्द कोई बाकी न रहा
कुछ भी न सुना,

कुछ भी न कहा,...!

उजास

वो कभी दूर तो,
कभी पास रही,
ज़िन्दगी अनसुलझे सवालों की
इक किताब रही!!
कभी टूट के बरसा,
उसकी चाहतों का अब्र!!
कभी लबों पे तिश्नगी,
बेहिसाब रही!!
उसकी नम आँखों में, चंद मायूसियों के साये थे!!
आते जाते किसी शिकवे की,
जहाँ हरदम मुझे तलाश रही!!
यूँ तो शबनमी था ज़िस्म का ज़र्रा ज़र्रा!!
रूह में अनबुझ सी मग़र,
मुसलसल कोई प्यास रही!!
दूरियाँ इश्क़ का मुक़द्दर हैं,
चलो मान भी लें!!
क्यूँ दिल को फिर भी,
किसी की आमद की आस रही!!
आफ़ताब सिमट आया है,
माँ के क़दमों में "विफल" !!
मेरी स्याह रातों में कुछ इस तरह उजास रही!!

तेरा ख़याल

एक लम्हे को भी जाता नही तेरा ख़याल,
तेरी कैसी ये रिहाई है ??
फिर उसी सिम्त लौट के जाना होगा ,
जहां रहबर है न रहनुमाई है !!
बहुत दिन हुए, न तूने कुछ कहा है, अपने काँपते लबों से,
न तेरी निगाहों से ही दिल की कोई बात हो पाई है
मेरे ख़्वाबों के कुछ अधूरे से अक़्स तेरी पनाह में हैं
सुनते हैं तूने भी कुछ वादे निभाने की कसम खाई है !!!
ऐ मेरे मुल्क!!
अपने मसीहाओं से लुटना ही, तेरा मुक़द्दर ठहरा !!
खौफ़ की प्राचीरों में क़ैद, ज़िन्दगी पर ,
अमूमन मौत खिलखिलाई है ।।
ज़िन्दगी उधार,साँस किश्तों पर,
पेट में आग और आँखों में बरसात लिये !!
ये ग़रीब जाएँ तो कहाँ जाएँ??
इधर कुआँ तो उधर खाई है !!
कैसे जानेंगे वो चारागर, किसी और के दर्द सिफ़त???
नज़र जेब पर हो तो, आँखों के अश्क़ कहाँ देते दिखाई हैं ।।
तेरे अश्क़ सिर्फ़ तुझ तक ही रहें, मेरी चाहतों को तसलीम नही !!
तेरी दर्द ए शिकन से, मेरी आँखों में भी शबनम सी उतर आई है,....!

तेरे शहर की ओर...

तेरे शहर की ओर
बस यूँ ही अपने कांधो पर सफ़र का बोझ लिए,
चल पड़ा हूँ तेरे शहर की ओर..
निगाहों में तेरी सूरत,
लबों पर तेरा नाम लिए,
चल पड़ा हूँ तेरे शहर की ओर..
कौंधते हैं स्मृतियों में,
पल प्रति पल साथ गुज़रे हुए लम्हात,
कुछ अनकिये वादों की अनुगूंज मन में लिये,
चल पड़ा हूँ तेरे शहर की ओर...
मेरी वफाओं के सिलसिले,
तुझे हरदम न जाने क्यूँ बेमानी ही लगे??
मैं एक आईना था, ये तुझको दिखाने के लिए,
चल पड़ा हूँ तेरे शहर की ओर...
तू रूठती है मुझसे तो,
ख़ुद से भी कुछ और ख़फ़ा हो जाती है !!
तेरी मुहब्बतों का राज़ जब मुझसे पोशीदा नही,
चल पड़ा हूँ तेरे शहर की ओर...
मेरी शिक़स्त का बाइस, रक़ीब नही "विफ़ल",
मेरे अहबाब ही थे सब !!
इसी सच का यक़ीन ख़ुद को दिलाने के लिए,
चल पड़ा हूँ तेरे शहर की ओर...!

जुल्फों की मानिंद

शाम जब उसकी
जुल्फों की मानिंद
खुला करती है, कुछ शब्द गूँजते हैं
सन्नाटों के स्वर रागिनी बनकर,...
ज़िस्म की खुशबुओं से
जब मेरा कोई सरोकार नही है
गोया आ बिराजते हैं, कुछ परिंदे
ज़ेहन की शाखों पर
अतीत के जंगलो से निकलकर,...
सर उठाते हैं कुछ प्रश्न
बेंधती हैं कुछ बेचैनियां
वक़्त कुछ लम्हों के लिए
खोलता है अपनी बही
उदासियाँ क़तरा क़तरा
खो जाती हैं बेतरतीब सी बहकर ......
भरम टूटा है जब से कुछ झूठे सहारों का
इर्द गिर्द डोलती परछाइयाँ
रंध्र की रोशन लकीरों सी
खो चलीं खुद में सिमटकर....
देखी थी मैंने कभी
जिसकी आँखों में सदियों की शनासाई
मुझसे मिलता है वो शख़्स
अब भी मग़र मग़र भेष बदलकर,....!

ओ मेरे मनमीत

ज़िन्दगी ले के चली बज़्म से दूर तेरी,,
फिर किसी मोड़ पे मिलने का तू वादा कर ले
तेरे ग़म पी लिए मैंने
प्यासे सहरा की तरह,
मेरे ज़ख्मों में भी तू थोडा सा साझा कर ले
कांटो का सफ़र, खुशबुओं के मरहले,
शबनम की मौसिकी, रुपहले अब्र, धानी धरा,
वासन्ती पवन, मौसम की आशिक़ी
सफ़र की गर्द ,आइनों की हँसी ,
पूनम की चाँद रात सुलगता सच ,
काँपते लब, भीगे भीगे से जज़्बात ,
साँसों का राग, प्राणों के गीत,
जीवन संगीत, भूली सी याद,
बिखरी सी प्रीत, कुछ शेष नही जब ,
ओ मेरे मनमीत .....
मरने की वजह लेकर भी,
जीने की दुआ मांगता हूँ
तेरी हया के रंगो से,
फ़लक़ पे धनुक टाँकता हूँ
हाँ !! मैं दर्द का सौदागर हूं, खुश रहने की दवा बांटता हूँ!!!

अदा रोने की

चलो मुस्कुराकर मिलें ज़िन्दगी से;
अदा रोने की अब पुरानी हुई !!
लबों का तबस्सुम ;
निगाहों का जादू;
वो मीठी सी बातें कहानी हुईं !!
तुम्हे देखकर ही पता चल गया है;
गुलशन में क्यूँ बदगुमानी हुई??
मेरे साथ चलकर
कहीं खो गया जो ??
उसके कदमों की आहट बेगानी हुई !!
ना धरती थी अपनी
ना आकाश अपना ;
बर्बाद यूँ ही जवानी हुई !!
भोले परिंदों की मासूम चाहत ;
गुज़री हुई इक निशानी हुई !!
सितारों से आगे
नज़ारों से पूछा
हमारे ही सच की बयानी हुई !!
बढते कदम जो चले रेत पर थे
सफर में उन्हीं की रवानी हुई !!

कैसे कह दूँ ??

कैसे कह दूँ ?? क्या कह दूं??

कि हमारी खुराफ़ातों का
इलज़ाम किसी और के सर आये
कुदरत के तमाम रँगीन नज़ारे
प्रकृति की अनुपम सौगातें खो बैठे हैं हम अपनी ,
फ़क़त अपनी ही खुशियों की तलाश में
उगा लिए हैं हर कहीं अपनी हवस के बिम्ब
भर दिया है उसकी रगों में सीमेंट और कंक्रीट
साँस-साँस बारूदी गमक
नही लगाते अब हम किसी की
स्मृति में कोई वृक्ष न ही सहेजते है
खुद ब खुद उग आये शज़र
जंगलो में लगी आग बरसों बरस यूँ ही जला करती है
गोया ले ली हैं कुदरत ने
इंसानो से उसकी फितरत उधार
इतना थका दिया हमने अपनी करतूतों से
ज़मीन भी मज़बूर है करवट बदलने को
जैसे हो जाता है कोई खुद से ही बेज़ार
तमाम नियम बदल जाते हैं प्रकृति के
जब हम सिर्फ अपने ही लिए जीते हैं
इसीलिए वैशाख और जेठ ठंडे है,
आषाढ़ और सावन यूँ ही रीते हैं,...!!!

अनकही मूक बातें

अनकही मूक बातें,
अपनी खामोशियों में ,
कुछ न कहकर भी ,
क्या कुछ नही कह जाती हैं
ये जुदा बात कि,
शब्दों की कोई फांस
अनचाहे ही पैबस्त हो
भीतर ही कहीं टूट जाती है ।।
पोर पोर रिसते दर्द
और अनसुलझी गुत्थियां,
भरी सी मग़र...रिक्त आँखे तकती हैं,
सूना आसमाँ किसी सहारे की आरज़ू में....
दूर बहुत बहुत दूर जब टूटता है
सितारा कोई,
तो अपनी इच्छाओं के लिए नही
दुआ माँगता हूँ मैं,
उसके सफ़र के खत्म होने की..
क्यों किसी के दर्द बेवजह,
हमारी खुशियों की वजह होते हैं,...।

पैग़ाम

कोई पैग़ाम बन कर
मेरी पलकों की नमी
मुझ तक यूँ पहुँचती है
जैसे दरख्तों से कोई
शाम छन कर ज़मीन पर उतरती है
तेरे वजूद में
मेरी सुगबुगाहट के भी कुछ रेशे हैं
तेरी पलकों पे क्यूँ
शबनम देर तक ठहरती है
बहुत याद आऊंगा तुझको
तू कोशिश न करभुलाने की
मेरी यादों की खुशबू है
जो तेरे बदन से
दूर तक बिखरती है
मेरी गुस्ताखियों ने अक्सर
दर्द दिये हैं तुझको
मेरा मौन तेरी खुशियों की
शर्त है तो मेरी चुप,
तुझे क्यों अखरती है?

अभिशप्त

मुझे जाना होगा
तो जाओ,
खो जाओ अपनी फिर उन्ही
बेमक़सद व्यस्तताओं में
टूटते बदन की थकन
और ज़ेहन पर न जाने
क्या क्या बोझ लिए??
अपनी उन्ही तारीकियों में खो जाने के लिए अभिशप्त
कहाँ रास आएंगे तुम्हे मेरे उजाले
लम्हा लम्हा जी लेने की मेरी ख्वाहिशें
कुछ नितांत अपनेपन में
डूबने का मेरा जीवन दर्शन ...
कुछ भी तो नही??
वो रखता है मौलिक विभेद
एक ही परिधि पर होकर गोया,
अलग-अलग ध्रुवों पर होने का सच
तो जाओ अपनी उसी दुनिया में,
हर आहट पर महसूस होता हो
जहां कुछ न कुछ खत्म होने का अहसास
निगाहों की चमक,
दम तोड़ती अभिलाषाएं
खुश्क होती शबनम
नींद भी रेहन हैं जहां,
जिम्मेवारियों के बोझ तले,....!

तलाश

मेरी
यादों में उभर आते है वो लम्हे,
जब झरते थे बेवजह हरसिंगार के फूल,
बैठती थी अलकों पर तितलियाँ,
शर्मिंदा थे तुमसे मेरे आँगन के पीले गुलाब,
मुस्कुराते थे हरी दूब पर टँके बेशुमार मोती,
गर तुम बुरा न मानो तो
खींच देना एक लकीर,
अपने और
हवा के अनदिखे परों पर तैरते
उस मासूम से चेहरे के दरम्याँ
जहां झुलसाने लगी है तल्ख़ धूप....
हाँ
यकीनन
ये मेरी चाहतों से वाबस्ता है
मेरा इख़्तियार में तो ये भी नही कि खुद जलूँ,
मेरी आग भी मेरी अपनी कहाँ है??
बस....
मैं हवाओं की सिम्त,
लौट कर आता हूँ यूँही,
अपने वज़ूद की चिंगारियां लेकर ,
कुछ प्रश्नों की शक्ल में,
कुछ उत्तरों की तलाश में,...!

प्रश्न चिन्ह

सुनो प्रिये!!
जब जब भी तुम्हारे दर्द से गुज़रा हूँ,,
मेरी आँखों में भी नमी उतरी है,,
तुम्हारे प्रश्न,तुम्हारी शंकाएँ,तुम्हारी वेदना सब वाज़िब हैं मग़र,
ज़िन्दगी को कभी देखना दूसरे नज़रिये से भी,
दुनिया में प्रेम से पवित्र और शाश्वत कुछ भी नही,,
बना लिए हैं हमने कुछ घेरे, खींच दी हैं मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा,
मग़र इन दायरों में सम्पूर्ण समर्पण के बावजूद मन कहीं आबद्ध हो तो,,
उसके रीतेपन को भरने की ये एक प्राकृतिक प्रक्रिया है।।
हमे सम्पूर्ण होने का वरद,
हमारे होने के साथ ही अयाचित मिलता है हमें,,
चलती रहती है ताउम्र सतत, इस रीतेपन को भरने की प्रक्रिया,,
तमाम पड़ावों से गुज़रते हुए,, गो मन और देह एक दूसरे पूरक हैं,
निर्धारित है सब,, सन्तुलन की इस अबाध प्रक्रिया में,
हमारी खुशियों के बरअक्स, नियति ने गिनकर रखे हैं हमारे ताज़ के काँटे,,
नियत है हमारे कन्धों पर टँकने वाली सलीब का वजन,
और उत्तेजनाओं से भरे वो वहशी चेहरे,
जो हर वक़्त एक भीड़ की शक़्ल में मौजूद हैं हमारे इर्द गिर्द,,
ज़ामिन हैं हमारी टूटती सांसो के,,
मग़र सिलसिला रुकता तो नही,,
कुछ अरसे बाद पुनर्जन्म होना ही हमारी नियति है,,
तो खोने पाने के इस खेल में,,ये व्यर्थ के प्रश्न चिन्ह क्यूँ???
सहज ही लें ज़िन्दगी के फ़लसफ़े और फैसले, तो मुस्कानें,
मुंतज़िर हैं कहीं....!

उदासी

आज अरसे बाद वो फिर से रूबरू थी,
गौर से देखा तो लगा
वक़्त उसकी देह की परिक्रमा कर,
थक हार कर चेहरे पर आकर ठहर गया है गोया,
झील सी गहरी आँखों में वही उदासी का गहरा सा समन्दर,
नही खिलने दिए गुज़श्ता दिनों की बद्गुमानियों ने उसके लबों के कमल,
मग़र एक फीकी सी मुस्कान सजा लेने की
उसकी अपनी वो अदा आज भी ज़िंदा है
पिया करती थी जो कभी टकटकी लगाकर,
मेरे शब्द बूँद बूँद
खिल जाती थी अंतरतम की हर पाँखुरी,
देह का रोम रोम गवाह होता था मेरी खुशबू का,
मेरी बदनामी की कहानियाँ भी
जिसे लता के लोकप्रिय गीतों की तरह मुखाग्र थीं
न जाने क्यूँ उदास मना और विमुख सी है
नही पहुँच रहे उसके कानों तक मेरे शब्द
गो दिखावा वो कितना भी करे,
मुझे तक उसकी अनमनेपन की गंध पहुँच ही जाती है,,
मैंने बरसों जिसके कैनवास में भरे हैं घटाओं के ऊदे रँग
उसकी ही आँखों की नम कोर,,
मुझे मेरे ही कटघरे में खड़ा कर देती है उसके संस्पर्श की बेहद हदें,
मेरी हथेलियों से आगे नही बढ़तीं
न ही लिबास की सलवटें गहराई हैं
कुछ तो है जो चटका है,,उसके भीतर ...
मुझे गाँठ लगाने के लिए कोई छोर भी नही सूझता,......!

नाम

चलो तुम ही कह दो आज,
महफ़िल से ये राज की बात ।।
वो एक नाम जो दफ़न है,मेरे सीने की गहराइयों में,
मैं ढूँढता हूँ तो कुछ मिलता ही नही,
मुझमे मेरा पता...
गोया मुझमे मेरा कुछ रहा ही नही,
वो कोई और शख़्स था,
जो रेहन था मेरी साँसों में,
क़तरा क़तरा तवील ज़िन्दगी,
लम्हा लम्हा रिसते दर्द,
शेष कुछ भी तो नही ,
बस एक इल्तिज़ा भर है,
कि तुम भी...हो सके तो कोई याद,,
मेरे नाम की भी रखना !!
गो मैं जानता हूँ कि नाम,
अभिशप्त है गुम हो जाने के लिए,
मग़र उससे ही उभरते हैं, चेहरों के अक़्स ज़ेहन में,
आवाज़ों के जंगल में चस्पाँ, कुछ खामोशियों की निशानी है?
समय मुट्ठियों से फिसलती रेत है या बूढ़ा हरकारा कोई,
या बहते हुए दरिया में ठहरा हुआ सा पानी है...
ये मिलना मिलाना और ये वस्ल की बातें,,
ये जादू से दिन और ये शबनम सी रातें
सब झूठी कहानी है,...!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - ब्रजेश शर्मा 'विफल'

जन्म - 26 अगस्त 1965, मेरठ (उ.प्र.)

शिक्षा - बी.एस.सी., बी.एड., एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य)

पता - 1199/1 ईसाई टोला, दिलदार नगर, खाती बाबा परी इंटरनेट प्लाजा के पास, झांसी (उ.प्र.) 284003

मो.नं. - 9451171389, 8218661037

ई मेल -braj.vifal4@gmail.com

प्रकाशन -18 से अधिक सांझा काव्य संकलन।
राष्ट्रीय समाचार पत्र और पत्रिकाओं, प्रयास अंतर्राष्ट्रीय इ पत्रिका एवं राष्ट्रीय इ पत्रिकाओं, अंतरा शब्द शक्ति एवं अन्य में रचनाओं का प्रकाशन।

सम्मान - गज़ल सागर झुंझनू द्वारा 'साहित्यकार सम्मान', विश्व हिंदी रचनाकार मंच द्वारा 'काव्यश्री' सम्मान।
हिंदी सागर सम्मान, प्रतिमा रक्षा सम्मान, करनाल द्वारा ग्रेट अचीवर्स अवार्ड।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, सोपान काव्य सम्मान, काव्य मनीषी सम्मान, युग सुरभि सम्मान।
श्री रामसेवक सम्मान, वागेश्वरी पुंज अलंकरण सहित कई सम्मान एवं ऑनलाईन सम्मान।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-82-7

मूल्य- 55/-